ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे   निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26   अंकः 44   बुलेटिन अवधिः 10–14 जून, 2017   दिनः शुक्रवार   दिनाँकः 9 जून, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	10–06–2017	11–06–2017	12–06–2017	13–06–2017	14–06–2017
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	35	37	38	38	39
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	23	24	24	25	26
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	80	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	40	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	06	08	08	10	10
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पूर्व	उत्तर–पश्चिम	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**2 से 8 जून** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक से घने बादल छाये रहे तथा 7.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 32.0 से 42.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 22.0 से 29.6 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 54 से 78 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 21 से 80 प्रतिशत एवं हवा 5.2 से 13.9 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व–उत्तर–पूर्व व पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ उर्द एवं मूंग की फसलों को पकते ही काट लें। कटाई में विलम्ब न करें अन्यथा दाने फलियों के चटकने से जमीन पर गिरते हैं। उर्द एवं मूंग की 80 प्रतिशत फलियों के पकते ही, फलियों की तोड़ाई करके, हरे पौधों को खेत में ही हरी खाद के रूप में पलट दें।
- ❖ धान की नर्सरी डाले।
- ❖ धान की सीधी विधि से बुवाई जून के प्रथम पखवाड़े में करें। धान की सीधी बुवाई हेतु मध्यम अवधि की प्रजातियों का चुनाव करें। बीज दर 60–70 कि0ग्रा0 / है0 रखें तथा लाईनों में 18–22 से0मी0 की दूरी पर कतारों में करें। बुवाई के 2 दिन के अंदर पेन्डीमिथलीन के 1.0 कि0ग्रा0 सक्रिय अवयव का छिड़काव करें। इसमें रोपाई की लागत वचती है, 20 प्रतिशत पानी की बचत होती है तथा फसल 7–10 दिन पहले पक कर तैयार हो जाती है।
- ❖ मक्का बुवाई का सर्वोत्तम समय जून का प्रथम पखवाड़ा है। संकुल प्रजातियों – नवीन, तरूण, किरण, नवजोत, प्रताप मक्का–1, पूसा संकुल 3 एवं 4 की बुवाई हेतु बीज दर 18 से 20 कि0ग्रा0 / है0 रखें। बुवाई 60–75 से0मी0 पर करें। जमने के बाद पौधें से पौधों की दूरी 20–25 से0मी0 विरलीकरण द्वारा कर दें। बुवाई के समय 40–50 कि0ग्रा0 नत्रजन, 60 कि0ग्रा0 डाई फासफोरस पेंटाआक्साईड एवं 40 कि0ग्रा0 / है0 पोटाश का प्रयोग करें।
- ❖ शीघ्र पकने वाली अरहर की बुवाई जून के प्रथम पखवाड़े में करें ताकि इसके बाद गेहूँ की विलम्ब से बुवाई कर सकते है।
- ❖ उन्नतशील प्रजातियों– पंत अरहर–3, पंत अरहर– 291, यू0पी0एस0– 120, पूसा–992 आदि की बुवाई 50–60 से0मी0 की दूरी पर लाइनों में करें। बीज दर 15–20 कि0ग्रा0 / है0 रखें। बीज का राइजोवियम से उपचार करें। तथा बुवाई के समय 15 कि0ग्रा0 नत्रजन एवं 40–50 कि0ग्रा0 फासफोरस का प्रयोग करें।
- ❖ गन्ना में काला बग का प्रकोप हो तो क्लारपाइरीफॉस 20 ई0 सी0 के 2.0 ली0 / है0 या फेन्थोएट 50 ई0 सी0 के 1.0 ली0 / है0 या क्यूनसलफॉस 25 ई0 सी0 के 2.0 ली0 को 500 ली0 पानी में घोल कर छिड़काव करे।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ कद्दु वर्गीय फसलों में बेल सूखने की समस्या के नियंत्रण हेतु सूखे हुए बेल को काटकर नष्ट कर दें तथा जड़ों की कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत (1 ग्राम प्रति लीटर) की दर से घोल बनाकर सिंचाई करें।
- ❖ कद्दु वर्गीय फसलों की पत्तियो पर अनियमित आकार में पीले धब्बे दिखाई पड़ने पर पत्तियो को उलटकर निरीक्षण करें यदि निचली सतह पर हल्के धूसक रंग की फॅफूदी की बढ़वार दिखाई दे तो नियत्रंण के लिए मेन्कोजेब 2.5 किग्रा0 / ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ भिण्डी की फसल में पत्तियों की नसे यदि पीली पड़ रही हो तो ऐसे पौधो को निकालकर नष्ट कर दे। तथा रस चूसने वाले कीड़ो के नियत्रंण के लिए किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च की फसल में ऊपर से डन्ठल काले पड़कर सूखने की समस्या की निदान हेतु संक्रमित शाखाओं को तोड़कर हटा दें एवं कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च एवं टमाटर की उपरी पत्तियो पर बारीक चितकबरे धब्बे दिखाई देने पर सर्वांगी कीटनाशी का 10 से 15 दिन के अन्तराल पर नियमित छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0 / है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0 / है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0 / है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम / है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।
- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0 / है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0 / है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0 / है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।
- ❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0 / है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर / है0 की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।
- ❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0 / है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0 / है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- पशुओ को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- नाइट्रेट विषाक्तता होने पर पशु की श्वसन एवं नाड़ी दर बढ़ जाती है एवं सांस लेने में कठिनाई, मॉसपेशियों में ऐंठन व कमजोरी आ जाती है। इससे बचाव हेतु मेथिलीन ब्लू के 1 प्रतिशत विलयन की 50–100 मि0ली0 मात्रा सीधे ही नस में देना चाहिए।
- सायनाइड ग्रस्त चारा खाए हुए पशु को पानी नही पिलाना चाहिए तथा चारागाहो में चराने ले गये पशुओ को कम बढ़ी हुई ज्वार, बाजरा, चरी की फसल न खाने दे।
- छोटे मुर्झाये हुए पीले व सुखकर ऐठे हुए पौधो को चारे के रूप में उपयोग नही करे।
- गर्मी के मौसम में पशुशाला के आसपास की नालियो में मेलाथियॉन अथवा अन्य कीटनाशक दवाइयो8 का छिड़काव समय समय पर कराते रहे।
- विदेशी गायें अधिक गर्मी सहन नही कर पाती जिससे उनके आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी आ जाती है। और उनका उत्पादन प्रभावित होता है। अतः विदेशी गायो का उत्पादन बनाये रखने तथा बीमारियो से बचाव हेतु गौशाला के अन्दर तापमान नियंत्रण हेतू शीतल यंत्र जैसे पंखा, कूलर अथवा आधुनिकतम शीतल यंत्र की व्यवस्था करे।
- अगर पशु लू के प्रकोप का शिकार हो जाए तो पास के पशु चिकित्सक से मिलकर उसका तुरन्त उपचार करायें।
- पशुओं को स्वच्छ, ताजा एवं ठंडा जल दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) पिलाना चाहिए। यदि पशु के शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी मौजूद हो तो उसकी चमड़ी के तापमान एवं मौसम के तापमान में सामंजस्य बना रहता है एवं पशु को लू भी नहीं लगती।
- गर्मी से बचाने हेतु पशुओं को संतुलित आहार जिसमें सभी पोषक तत्व प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण तथा विटामिन्स उचित मात्रा एवं उचित अनुपात में उपस्थित हों, देवें। सूखे चारे के साथ हरा चारा एवं दाना अवश्य दें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर